ISSN:2583-8849

डॉ. रशीद ग़ौरी
सोजत सिटी (राजस्थान)

भगवान ने सुन ली

आज फिर जोरदार बारिश हुई। वैसे कल रात से ही लगातार झमाझम बरसात हो रही है। बादल गरज रहे हैं।

" अम्मा, यह बारिश कब रुकेगी? देखो ना! झौपड़ी की छत जगह-जगह से टपक रही है। चार-पांच जगह तो हमने बर्तन-ठीकरे लगा दिए हैं। अम्मा, हमें इस कच्ची दीवारों और केल्हू -बांस की छत वाली बूढ़ी झौपड़ी से कब छुटकारा मिलेगा...?"

बेटी की बात पूरी होती, उससे पहले ही अचानक झौपड़ी की एक दीवार डरावनी आवाज़ के साथ भरभराकर गिर गई। घबराए घर के तीनों जन बाहर निकल भागे।

तभी, पूरी झौपड़ी ही ढ़ेर हो गई। मेहनत- मजदूरी करके अपने दो बच्चों का पेट पाल रही विधवा कमली की तो जैसे दुनिया ही उजड़ गई।

" अम्मा, भगवान ने हमारी सुन ली...। देखो, हमें इन कच्ची दीवारों से छुटकारा मिल गया...।"

मासूम बच्ची खुशी से चहक रही थी।

ढाई अक्षर

वे दोनों सेवानिवृत बुद्धिजीवी मित्र आपस में बतिया रहे थे।

" हर धर्म श्रेष्ठ होता है। जो हमें संयम, संस्कार,आचरण, संस्कृति, व्यवहार,प्रेम और जीना सिखाता है। लेकिन, आज हम अपने धर्म का ईमानदारी से पालन और सम्मान करने के बजाय विपरीत अंधेरी धाराओं में दिशाहीन से बहे जा रहे हैं। हमें अपने आप को दिखाने की जरूरत ही क्या है...? हमें तो इन संकीर्णताओं से ऊपर उठकर अपने आपको भारतीय कहने में गर्व महसूस करना चाहिए।"

"सही कहा मित्र, लेकिन दुखद स्थिति यह है कि आज हमारी धर्मनिरपेक्षता और इंसानियत, धर्म के ढाई अक्षरों में फंसकर रह गई है...। " कहते हुए उसके लब एक हल्की सी जुम्बिश के साथ थरथराकर रह गये।

वहीं सामने के मंदिर से आरती की मधुर वाणी और दूर अजान की सदाएं एक साथ वातावरण को शुद्ध बना रही थी।